जागरण सिटी हिसार

प्रजनन फार्म को मिली कृत्रिम गर्भाधान की किट, सुधारी जाएगी बकरियों की नस्ल

निदेशक प्रभारी डा. एके मल्होत्रा को केंद्रीय मंत्री गिरीराज सिंह ने भेंट की किट

जागरण संवाददाता, हिसार : देश में कृत्रिम गर्भाधन से बकरियों का नस्ल सुधार कार्यक्रम अब तेजी से आगे बढ़ेगा। उत्तर प्रदेश के पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो अनुसंधान संस्थान मथुरा में केंद्रीय मत्स्य, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय के कैबिनेट मंत्री गिरीराज सिंह ने केंद्रीय भेड़ प्रजनन फार्म के निदेशक प्रभारी डा. एके मल्होत्रा को कृत्रिम गर्भाधान की किट सौंप दी है।

इस किट के माध्यम से बीटल नस्ल की बकरियों के कृत्रिम गर्भाधान की सहायता से नस्ल सुधार किया जाएगा। देश में बकरियों की नस्ल सुधार के लिए सरकार की तरफ से इस बार कदम उठाए गए हैं। देश के एकमात्र फार्म में इसकी शुरुआत हो रही है। इससे पहले सभी प्राइवेट इंस्टीट्यूट में इस पर रिसर्च चल रही थी। वैज्ञानिकों ने रिसर्च पूरी करने के बाद अब मथुरा के विश्वविद्यालय में सीमन बैंक स्थापित किया है। केंद्रीय मंत्री उसी बैंक का उद्घाटन करने के लिए पहुंचे थे। दो दिन चली वर्कशॉप में केंद्रीय मंत्री ने फार्म के निदेशक प्रभारी डा. मल्होत्रा को किट देते हुए नस्ल सुधार का कार्यक्रम तेजी से करने पर बल दिया। इस कृत्रिम गर्भाधान को किसानों तक भी ले जाने के लिए बातचीत हुई। ताकि किसानों की बकरियों की नस्ल को भी सुधारा जा सके।

केंद्रीय भेड़ अनुसंधान फार्म के निदेशक प्रभारी डा. एके मल्होत्रा को किट देते केंद्रीय मंत्री गिरीराज सिंह। ● निदेशक प्रभारी के सौजन्य से

नस्ल सुधार में अनूठा कदम : डा. मल्होत्रा

डा. एके मल्होत्रा ने बताया कि किट उनको मिल गई है। उनके फार्म में मौजूद बीटल नस्ल की बकरियों पर वह नस्ल सुधार कार्यक्रम की शुरुआत करेंगे। देश में अलग-अलग जगह विभिन्न नस्ल की बकरियों पर यह काम किया जाएगा। इसका फायदा किसानों को होगा। उन्होंने कहा कि यह एक अनूठा कदम है। यह तकनीक बकरी पालन वाले सीमांत किसानों तक नाममात्र फ्री में उपलब्ध करवाई जाएगी।

नस्ल सुधार कार्यक्रम

- बीटल नस्ल की बकरियों का होगा कृत्रिम गर्भाधान
- मथुरा के विश्वविद्यालय में सीमन बैंक किया गया है स्थापित

लुप्त होती प्रजातियों को बचा सकेंगे वैज्ञानिक

बकरियों में काफी प्रजाति लुप्त हो रही है। कृत्रिम गर्भाधान के जरिए उस प्रजाति को बचाया जा सकेगा। वैज्ञानिकों ने पहले बीटल प्रजाति को अपने यहां रखकर बचाव किया था। उस समय कृत्रिम गर्भाधान नहीं था। अब इस तकनीक से आम किसान को भी फायदा होगा।